सोहिला साहिब

अध्यात्म की ओर यात्रा

हिंदी अनुवाद

SikhBookClub.Com

SGGS Online.com

विषयसूची

1. सोहिला साहिब----------1
2. प्रार्थना----------8
3. यात्रा के लिए दर्शन----------12
4. पगड़ी का महत्व----------14
5. महिलाओं की भूमिका----------16
6. विनम्रता आपकी यात्रा का मुखय सार है----------20

🙏🙏🙏 We are distributing Free Gutkas, Divine message of the Guru globally in all the major languages, To Continue this Monumental task, please donate at https://sggsonline.com/donation

This Sewa has been done by Sewadars & SikhBookClub.

This text is only a translation and only gives the essence of the Guru's Divine word. For a more complete understanding, please read the Gurumukhi Sri Guru Granth Sahib Ji. If any errors are noticed, please notify us immediately via email at walnut@gmail.com.

Publisher: SikhBookClub.com

ਸੋਹਿਲਾ ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਦੀਪਕੀ ਮਹਲਾ ੧
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है, जिसे सतगुरु की कृपा से पाया जा सकता है।

ਜੈ ਘਰਿ ਕੀਰਤਿ ਆਖੀਐ ਕਰਤੇ ਕਾ ਹੋਇ ਬੀਚਾਰੋ ॥
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥
जिस सत्संगति में निरंकार की कीर्ति का गान होता है तथा करतार के गुणों का विचार किया जाता है;

ਤਿਤੁ ਘਰਿ ਗਾਵਹੁ ਸੋਹਿਲਾ ਸਿਵਰਿਹੁ ਸਿਰਜਣਹਾਰੋ ॥੧॥
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥
उसी सत्संगति रूपी घर में जाकर सृष्टि रचयिता के यश का गायन करो और उसी का सिमरन करो॥ १॥

ਤੁਮ ਗਾਵਹੁ ਮੇਰੇ ਨਿਰਭਉ ਕਾ ਸੋਹਿਲਾ ॥
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
हे मानव ! तुम उस भय-रहित मेरे वाहेगुरु की प्रशंसा के गीत गाओ।

ਹਉ ਵਾਰੀ ਜਿਤੁ ਸੋਹਿਲੈ ਸਦਾ ਸੁਖੁ ਹੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥
साथ में यह कहो कि मैं उस सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ। जिसका सिमरन करने से सदैव सुखों की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ रहाउ ॥

ਨਿਤ ਨਿਤ ਜੀਅੜੇ ਸਮਾਲੀਅਨਿ ਦੇਖੈਗਾ ਦੇਵਣਹਾਰੁ ॥
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥
हे मानव जीव ! जो पालनहार ईश्वर नित्य-प्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुम पर भी अपनी कृपा-दृष्टि करेगा।

ਤੇਰੇ ਦਾਨੈ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਤਿਸੁ ਦਾਤੇ ਕਵਣੁ ਸੁਮਾਰੁ ॥੨॥
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥
उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं।॥ २॥

ਸੰਬਤਿ ਸਾਹਾ ਲਿਖਿਆ ਮਿਲਿ ਕਰਿ ਪਾਵਹੁ ਤੇਲੁ ॥
ਸੰਬਤਿ ਸਾਹਾ ਲਿਖਿਆ ਮਿਲਿ ਕਰਿ ਪਾਵਹੁ ਤੇਲੁ ॥
इस लोक से जाने के लिए साहे-पत्र रूपी संदेश संवत्-दिन आदि लिख कर नियत किया हुआ है, इसलिए वाहेगुरु से मिलाप के लिए अन्य सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो। अर्थात् - मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ-कर्म कर लो ।

ਦੇਹੁ ਸਜਣ ਅਸੀਸੜੀਆ ਜਿਉ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ॥੩॥
ਦੇਹੁ ਸਜਣ ਅਸੀਸੜੀਆ ਜਿਉ ਹੋਵੈ ਸਾਹਿਬ ਸਿਉ ਮੇਲੁ ॥੩॥
हे मित्रो ! अब शुभाशीष दो कि सतगुरु से मिलाप हो जाए॥ ३॥

ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹੋ ਪਾਹੁਚਾ ਸਦੜੇ ਨਿਤ ਪਵੰਨਿ ॥
ਘਰਿ ਘਰਿ ਏਹੋ ਪਾਹੁਚਾ ਸਦੜੇ ਨਿਤ ਪਵੰਨਿ ॥
प्रत्येक घर में इस साहे-पत्र को भेजा जा रहा, नित्य यह संदेश किसी न किसी घर पहुँच रहा है। (नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है)

ਸਦਣਹਾਰਾ ਸਿਮਰੀਐ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵੰਨਿ ॥੪॥੧॥
ਸਦਣਹਾਰਾ ਸਿਮਰੀਏ ਨਾਨਕ ਸੇ ਦਿਹ ਆਵੰਨਿ ॥੪॥੧॥
श्री गुरु नानक देव जी कथन करते हैं कि हे जीव ! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, क्योंकि वह दिन निकट आ रहे हैं॥ ४ ॥ १ ॥

ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
ਰਾਗੁ ਆਸਾ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु आसा महला १ ॥

ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥
ਛਿਅ ਘਰ ਛਿਅ ਗੁਰ ਛਿਅ ਉਪਦੇਸ ॥
सृष्टि की रचना में छः शास्त्र हुए, इनके छः ही रचयिता तथा उपदेश भी अपने-अपने तौर पर छः ही हैं।

ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਏਕੋ ਵੇਸ ਅਨੇਕ ॥੧॥
ਗੁਰੁ ਗੁਰੁ ਏਕੋ ਵੇਸ ਅਨੇਕ ॥੧॥
किंतु इनका मूल तत्व एक ही केवल परमात्मा है, जिसके भेष अनन्त हैं।

ਬਾਬਾ ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥
ਬਾਬਾ ਜੈ ਘਰਿ ਕਰਤੇ ਕੀਰਤਿ ਹੋਇ ॥
हे मनुष्य ! जिस शास्त्र रूपी घर में निरंकार की प्रशंसा हो, उसका गुणगान हो,

ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ ਵਡਾਈ ਤੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
ਸੋ ਘਰੁ ਰਾਖੁ ਵਡਾਈ ਤੋਇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
उस शास्त्र को धारण कर, इससे तेरी इहलोक व परलोक दोनों में शोभा होगी॥ १॥ रहाउ ॥

ਵਿਸੁਏ ਚਸਿਆ ਘੜੀਆ ਪਹਰਾ ਥਿਤੀ ਵਾਰੀ ਮਾਹੁ ਹੋਆ ॥
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥
काष्ठा, चसा, घड़ी, पहर, तिथि व वार मिलकर जैसे एक माह बनता है।

ਸੂਰਜੁ ਏਕੋ ਰੁਤਿ ਅਨੇਕ ॥
सूरजु एको रुति अनेक ॥
इसी तरह ऋतुओं के अनेक होने पर भी सूर्य एक ही है। (यह तो इस सूर्य के अलग-अलग अंश हैं।)

ਨਾਨਕ ਕਰਤੇ ਕੇ ਕੇਤੇ ਵੇਸ ॥੨॥੨॥
नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥
वैसे ही हे नानक ! कर्ता-पुरुष के उपरोक्त सब स्वरूप ही दिखाई पड़ते हैं ॥ २ ॥ २ ॥

ਰਾਗੁ ਧਨਾਸਰੀ ਮਹਲਾ ੧ ॥
रागु धनासरी महला १ ॥
रागु धनासरी महला १ ॥

ਗਗਨ ਮੈ ਥਾਲੁ ਰਵਿ ਚੰਦੁ ਦੀਪਕ ਬਨੇ ਤਾਰਿਕਾ ਮੰਡਲ ਜਨਕ ਮੋਤੀ ॥
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
सम्पूर्ण गगन रूपी थाल में सूर्य व चंद्रमा दीपक बने हुए हैं, तारों का समूह जैसे थाल में मोती जड़े हुए हों।

ਧੂਪੁ ਮਲਆਨਲੋ ਪਵਣੁ ਚਵਰੋ ਕਰੇ ਸਗਲ ਬਨਰਾਇ ਫੂਲੰਤ ਜੋਤੀ ॥੧॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
मलय पर्वत की ओर से आने वाली चंदन की सुगंध धूप के समान है, वायु चंवर कर रही है, समस्त वनस्पति जो फूल आदि खिलते हैं, ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष की आरती के लिए समर्पित हैं।॥ १॥

ਕੈਸੀ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥
कैसी आरती होइ ॥
प्रकृति में तेरी कैसी अलौकिक आरती हो रही है

ਭਵ ਖੰਡਨਾ ਤੇਰੀ ਆਰਤੀ ॥
भव खंडना तेरी आरती ॥
सृष्टि के जीवों का जन्म-मरण नाश करने वाले हे प्रभु !

ਅਨਹਤਾ ਸਬਦ ਵਾਜੰਤ ਭੇਰੀ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥
कि जो एक रस वेद ध्वनि हो रही है वह मानों नगारे बज रहे हों। ॥१॥ रहाउ॥

ਸਹਸ ਤਵ ਨੈਨ ਨਨ ਨੈਨ ਹਹਿ ਤੋਹਿ ਕਉ ਸਹਸ ਮੂਰਤਿ ਨਨਾ ਏਕ ਤੋਹੀ ॥
सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥
हे सर्वव्यापक निराकार ईश्वर ! तुम्हारी हज़ारों आँखें हैं, लेकिन निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई भी आँख नहीं है, इसी प्रकार हज़ारों तुम्हारी मूर्तियाँ हैं, परंतु तुम्हारा एक भी रूप नहीं हैं क्योंकि तुम निर्गुण स्वरूप हों,

ਸਹਸ ਪਦ ਬਿਮਲ ਨਨ ਏਕ ਪਦ ਗੰਧ ਬਿਨੁ ਸਹਸ ਤਵ ਗੰਧ ਇਵ ਚਲਤ ਮੋਹੀ ॥੨॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सगुण स्वरूप में तुम्हारे हज़ारों निर्मल चरण-कमल हैं किंतु तुम्हारा निर्गुण स्वरूप होने के कारण एक भी चरण नहीं है, तुम घाणेन्द्रिय (नासिका) रहित भी हो और तुम्हारी हज़ारों ही नासिकाएँ है; तुम्हारा यह आश्चर्यजनक स्वरूप मुझे मोहित कर रहा है॥ २॥

ਸਭ ਮਹਿ ਜੋਤਿ ਜੋਤਿ ਹੈ ਸੋਇ ॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
सृष्टि के समस्त प्राणियों में उस ज्योति-स्वरूप की ज्योति ही प्रकाशमान है।

ਤਿਸ ਦੈ ਚਾਨਣਿ ਸਭ ਮਹਿ ਚਾਨਣੁ ਹੋਇ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
उसी की प्रकाश रूपी कृपा से सभी में जीवन का प्रकाश है।

ਗੁਰ ਸਾਖੀ ਜੋਤਿ ਪਰਗਟੁ ਹੋਇ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
किंतु गुरु उपदेश द्वारा ही इस ज्योति का बोध होता है।

ਜੋ ਤਿਸੁ ਭਾਵੈ ਸੁ ਆਰਤੀ ਹੋਇ ॥੩॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
जो उस ईश्वर को भला लगता है वही उसकी आरती होती है॥ ३॥

ਹਰਿ ਚਰਣ ਕਵਲ ਮਕਰੰਦ ਲੋਭਿਤ ਮਨੋ ਅਨਦਿਨੁ ਮੋਹਿ ਆਹੀ ਪਿਆਸਾ ॥
हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥
हरि के चरण रूपी पुष्पों के रस को मेरा मन लालायित है, नित्य-प्रति मुझे इसी रस की प्यास रहती है।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਜਲੁ ਦੇਹਿ ਨਾਨਕ ਸਾਰਿੰਗ ਕਉ ਹੋਇ ਜਾ ਤੇ ਤੇਰੈ ਨਾਇ ਵਾਸਾ ॥੪॥੩॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥
हे निरंकार ! मुझ नानक पपीहे को अपना कृपा-जल दो, जिससे मेरे मन का टिकाव तुम्हारे नाम में हो जाए॥ ४॥ ३॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੪ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

ਕਾਮਿ ਕਰੋਧਿ ਨਗਰੁ ਬਹੁ ਭਰਿਆ ਮਿਲਿ ਸਾਧੂ ਖੰਡਲ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥
यह मानव शरीर काम व क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है; लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने काम, क्रोध को क्षीण कर दिया हैं।

ਪੂਰਬਿ ਲਿਖਤ ਲਿਖੇ ਗੁਰੁ ਪਾਇਆ ਮਨਿ ਹਰਿ ਲਿਵ ਮੰਡਲ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੧॥
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥
जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मो के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही ईश्वर में लीन हुआ है॥ १॥

ਕਰਿ ਸਾਧੂ ਅੰਜੁਲੀ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥
करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥
संत-जनों को हाथ जोड़कर वंदना करना बड़ा पुण्य कर्म है।

ਕਰਿ ਡੰਡਉਤ ਪੁਨੁ ਵਡਾ ਹੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥
उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कार्य है॥ १॥ रहाउ॥

ਸਾਕਤ ਹਰਿ ਰਸ ਸਾਦੁ ਨ ਜਾਣਿਆ ਤਿਨ ਅੰਤਰਿ ਹਉਮੈ ਕੰਡਾ ਹੇ ॥
साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥
पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो परमेश्वर से विस्मृत) ने अकाल पुरुष के रस का आनंद नहीं पाया,क्योंकि उनके अंतर में अहंकार रूपी कांटा होता है।

ਜਿਉ ਜਿਉ ਚਲਹਿ ਚੁਭੈ ਦੁਖੁ ਪਾਵਹਿ ਜਮਕਾਲੁ ਸਹਹਿ ਸਿਰਿ ਡੰਡਾ ਹੇ ॥੨॥
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥
जैसे-जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ-चुभ कर कष्ट देता रहता है और अंतिम समय में यमों द्वारा दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं।॥ २ ॥

ਹਰਿ ਜਨ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮਿ ਸਮਾਣੇ ਦੁਖੁ ਜਨਮ ਮਰਣ ਭਵ ਖੰਡਾ ਹੇ ॥
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥
इसके अतिरिक्त जो मानव जीव सांसारिक वैभव अथवा भौतिक पदार्थों का त्याग करके परमेश्वर के भक्त बन कर उसके सिमरन में लीन रहते हैं, वें आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दु:खों से छूट जाते हैं,

ਅਬਿਨਾਸੀ ਪੁਰਖੁ ਪਾਇਆ ਪਰਮੇਸਰੁ ਬਹੁ ਸੋਭ ਖੰਡ ਬ੍ਰਹਮੰਡਾ ਹੇ ॥੩॥
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥
उन्हें नाश रहित सर्वव्यापक परमात्मा मिल जाता हैं और खण्डों-ब्रह्मण्डों में उनको शोभायमान किया जाता है॥ ३||

ਹਮ ਗਰੀਬ ਮਸਕੀਨ ਪ੍ਰਭ ਤੇਰੇ ਹਰਿ ਰਾਖੁ ਰਾਖੁ ਵਡ ਵਡਾ ਹੇ ॥
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ||
हे प्रभु ! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं, तुम सर्वोच्चतम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो।

ਜਨ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਅਧਾਰੁ ਟੇਕ ਹੈ ਹਰਿ ਨਾਮੇ ਹੀ ਸੁਖੁ ਮੰਡਾ ਹੇ ॥੪॥੪॥
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥
हे नानक ! जीव को तुम्हारे ही नाम का आश्रय है, हरि के नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है॥ ४॥ ४॥

ਰਾਗੁ ਗਉੜੀ ਪੂਰਬੀ ਮਹਲਾ ੫ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

ਕਰਉ ਬੇਨੰਤੀ ਸੁਣਹੁ ਮੇਰੇ ਮੀਤਾ ਸੰਤ ਟਹਲ ਕੀ ਬੇਲਾ ॥
करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥
हे सत्संगी मित्रो ! सुनो, मैं तुम्हे प्रार्थना करता हूँ कि यह जो मानव शरीर प्राप्त हुआ हैं, वह संत जनों की सेवा करने का शुभावसर है।

ਈਹਾ ਖਾਟਿ ਚਲਹੁ ਹਰਿ ਲਾਹਾ ਆਗੈ ਬਸਨੁ ਸੁਹੇਲਾ ॥੧॥
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥
यदि सेवा करोगे तो इस जन्म में प्रभु के नाम-सिमरन का लाभ प्राप्त होगा, जिससे परलोक में वास सरलता से होगा ॥ १॥

ਅਉਧ ਘਟੈ ਦਿਨਸੁ ਰੈਣਾਰੇ ॥
अउध घटै दिनसु रैणारे ॥
हे मन ! समय व्यतीत होते हुए निशदिन यह उम्र कम हो रही है।

ਮਨ ਗੁਰ ਮਿਲਿ ਕਾਜ ਸਵਾਰੇ ॥੧॥ ਰਹਾਉ ॥
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥
इसलिए तुम गुरु से मिलकर उनकी शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन के पार हेतु समस्त कार्य पूर्ण कर लो॥ १॥ रहाउ॥

ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਕਾਰੁ ਸੰਸੇ ਮਹਿ ਤਰਿਓ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥
ਇਹੁ ਸੰਸਾਰੁ ਬਿਕਾਰੁ ਸੰਸੇ ਮਹਿ ਤਰਿਓ ਬ੍ਰਹਮ ਗਿਆਨੀ ॥
इस जगत् में समस्त जीव काम-क्रोधादि विकारों और भ्रमों में लिप्त हैं, यहाँ से कोई तत्वेता यानी ब्रह्म का ज्ञान रखने वाला ही मोक्ष को प्राप्त हुआ है।

ਜਿਸਹਿ ਜਗਾਇ ਪੀਆਵੈ ਇਹੁ ਰਸੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਤਿਨਿ ਜਾਨੀ ॥੨॥
ਜਿਸਹਿ ਜਗਾਇ ਪੀਆਵੈ ਇਹੁ ਰਸੁ ਅਕਥ ਕਥਾ ਤਿਨਿ ਜਾਨੀ ॥੨॥
विकारों में लिप्त जिस मानव को ईश्वर ने स्वयं माया रूपी निद्रा से जगाकर नाम-रस पिला दिया, वही उस अकथनीय प्रभु की अलौकिक कथा को जान सका है॥

ਜਾ ਕਉ ਆਏ ਸੋਈ ਬਿਹਾਝਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਨਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥
ਜਾ ਕਉ ਆਏ ਸੋਈ ਬਿਹਾਝਹੁ ਹਰਿ ਗੁਰ ਤੇ ਮਨਹਿ ਬਸੇਰਾ ॥
इसलिए हे सत्संगियों ! जिस नाम रूप अमूल्य वस्तु का व्यापार करने आए हो उसे ही खरीदो, इस मन में हरि का वास गुरु द्वारा ही होता है।

ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇਗੋ ਫੇਰਾ ॥੩॥
ਨਿਜ ਘਰਿ ਮਹਲੁ ਪਾਵਹੁ ਸੁਖ ਸਹਜੇ ਬਹੁਰਿ ਨ ਹੋਇਗੋ ਫੇਰਾ ॥੩॥
यदि तुम गुरु की शरण लोगे तभी इस हृदय रूपी घर में हरि का स्वरूप बसा सकोगे और आत्मिक सुखों का आनंद प्राप्त करोगे, जिससे फिर इस संसार में आने-जाने का चक्र समाप्त हो जाएगा ॥ ३॥

ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸਰਧਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੇ ॥
ਅੰਤਰਜਾਮੀ ਪੁਰਖ ਬਿਧਾਤੇ ਸਰਧਾ ਮਨ ਕੀ ਪੂਰੇ ॥
हे मेरे अंतर्मन को जानने वाले सर्वव्यापक सृजनहार ! मेरे मन की श्रद्धा को पूर्ण करो।

ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਇਹੈ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ਮੋ ਕਉ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੪॥੫॥
ਨਾਨਕ ਦਾਸੁ ਇਹੈ ਸੁਖੁ ਮਾਗੈ ਮੋ ਕਉ ਕਰਿ ਸੰਤਨ ਕੀ ਧੂਰੇ ॥੪॥੫॥
गुरु साहिब कथन करते हैं कि यह सेवक सिर्फ़ यही कामना करता है कि मुझे केवल संतों की चरण-धूल बना दो अर्थात् मुझे उनके बताए मार्ग का अनुगामी बना दो ॥४ ॥ ५॥

ਅਰਦਾਸ

प्रार्थना

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ॥

ईश्वर एक है। सारी विजय विलक्षण गुरु (भगवान्) की है।

ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ।

आदरणीय तलवार या कृपाण (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्) हमारी सहायता करें!

ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ੧੦||

दसवें गुरु द्वारा सुनाई गई आदरणीय तलवार की कविता ।

ਪ੍ਰਿਥਮ ਭਗੌਤੀ ਸਿਮਰਿ ਕੈ ਗੁਰ ਨਾਨਕ ਲਈਂ ਧਿਆਇ॥

पहले तलवार को याद करो (दुष्टों का नाश करने वाले भगवान्); फिर गुरु नानक को याद करें (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें)

ਫਿਰ ਅੰਗਦ ਗੁਰ ਤੇ ਅਮਰਦਾਸੁ ਰਾਮਦਾਸੈ ਹੋਈਂ ਸਹਾਇ॥

फ़िर श्री गुरु अंगद, श्री गुरु अमर दास और गुरु राम दास का स्मरण और ध्यान करो; वे हमारी मदद करें ! (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਅਰਜਨ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਨੋ ਸਿਮਰੌ ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਰਾਇ॥

श्री गुरु अर्जन, गुरु हरगोबिंद और गुरु हर राय का स्मरण और ध्यान करो। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਸ੍ਰੀ ਹਰਿਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਧਿਆਈਂਐ ਜਿਸ ਡਿਠੈ ਸਭਿ ਦੁਖ ਜਾਇ॥

पूज्य गुरु हर कृष्ण का स्मरण और ध्यान करें, जिनके दर्शन मात्र से सारे कष्ट मिट जाते हैं। (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान केन्द्रित करें)

ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਉ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ॥

गुरु तेग बहादुर को याद करें और फिर आध्यात्मिक धन के नौ स्रोत (धैर्य, क्षमा दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुधि, विद्या सत्य, अक्रोध) आपके घर में तेजी से आएंगे।

ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥

हे प्रभु ! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਵਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਸਾਹਿਬ ਜੀ! ਸਭ ਥਾਂਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ॥

आदरणीय दसवें गुरु गोबिंद सिंह (उनके आध्यात्मिक योगदान पर ध्यान दें) को याद करें। हे भगवान्! कृपया पथ प्रदर्शन कर सर्वत्र हमारी सहायता करें।

ਦਸਾਂ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦੇ ਪਾਠ ਦੀਦਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

आदरणीय गुरु ग्रंथ साहिब में निहित दस राजाओं के दिव्य प्रकाश पर विचार करें और ध्यान करें और अपने विचारों को गुरु ग्रंथ साहिब की दिव्य शिक्षाओं की ओर मोड़ें और आनंद प्राप्त करें; बोले वाहेगुरु!(विलक्षण गुरु)

ਪੰਜਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਚੌਹਾਂ ਸਾਹਿਬਜ਼ਾਦਿਆਂ, ਚਾਲ੍ਹੀਆਂ ਮੁਕਤਿਆਂ, ਹਠੀਆਂ ਜਪੀਆਂ, ਤਪੀਆਂ, ਜਿਨ੍ਹਾ ਨਾਮ ਜਪਿਆ, ਵੰਡ ਛਕਿਆ, ਦੇਗ ਚਲਾਈ, ਤੇਗ ਵਾਹੀ, ਦੇਖ ਕੇ ਅਣਡਿੱਠ ਕੀਤਾ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰਿਆਂ, ਸਚਿਆਰਿਆਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ, ਖਾਲਸਾ ਜੀ ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

पाँच प्यारे, (गुरु गोबिंद सिंह के)चार पुत्रों के कर्मों के बारे में सोचो; चालीस शहीदों में से; अदम्य दृढ़ संकल्प के बहादुर सिक्खों की; नाम के रंग में डूबे भक्तों की; उनमें से जो नाम में विलीन थे; उन्हें जिन्होंने नाम का स्मरण किया और साथ में भोजन किया; उन्हें जिन्होंने नि:शुल्क रसोई शुरू की; उन्हें जिन्होंने अपनी तलवारें चलाईं (सत्य की रक्षा के लिए); दूसरों की कमियों को नज़रअंदाज करने वालों को; उपरोक्त सभी शुद्ध और वास्तव में समर्पित व्यक्ति थे; बोल वाहे गुरु!(विलक्षण गुरु)

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿੰਘਾਂ ਸਿੰਘਣੀਆਂ ਨੇ ਧਰਮ ਹੇਤ ਸੀਸ ਦਿੱਤੇ, ਬੰਦ ਬੰਦ ਕਟਾਏ, ਖੋਪਰੀਆਂ ਲੁਹਾਈਆਂ, ਚਰਖੜੀਆਂ ਤੇ ਚੜੇ, ਆਰਿਆਂ ਨਾਲ ਚਿਰਾਏ ਗਏ, ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ, ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹਾਰਿਆ, ਸਿੱਖੀ ਕੇਸਾਂ ਸੁਆਸਾਂ ਨਾਲ ਨਿਬਾਹੀ, ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਮਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਖਾਲਸਾ ਜੀ! ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

उन वीर सिक्ख पुरुषों और स्त्रियों की अनुपम सेवा को सोचो और याद करो, जिन्होंने अपना सिर न्यौछावर कर दिए, किन्तु सिक्ख धर्म का समर्पण नहीं किया; जिन्होंने शरीर के एक-एक जोड़ के टुकड़े-टुकड़े कर लिए; जिन्होंने अपनी सिर की खाल निकलवा दी; जिन्हें बांधकर पहियों पर घुमाया जाता था और उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते थे; जिन्हें आरी

से काटा गया था; जिवित खालें उतारी गईं; जिन्होंने गुरुद्वारों की मर्यादा बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया; जिन्होंने अपने सिक्ख धर्म को नहीं छोड़ा; जिन्होंने अपना सिक्ख धर्म रखा और अपने लंबे केशों को आखिरी सांस तक सहेज कर रखा; बोल वाहे गुरु!

ਪੰਜਾਂ ਤਖਤਾਂ, ਸਰਬੱਤ ਗੁਰਦੁਆਰਿਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਧਰ ਕੇ ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

अपने विचारों को सिक्ख धर्म के सभी सिंहासनों और सभी गुरुद्वारों की ओर केंद्रित करें; बोलो वाहे गुरु!

ਪ੍ਰਿਥਮੇ ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ, ਸਰਬੱਤ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਕੋ ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਚਿਤ ਆਵੇ, ਚਿੱਤ ਆਵਨ ਕਾ ਸਦਕਾ ਸਰਬ ਸੁਖ ਹੋਵੇ।

पहले तो सारे आदरणीय खालसा यह दुआ करते हैं कि वे आपके नाम का ध्यान करें; और इस तरह के ध्यान के माध्यम से सभी सुख और आराम मिलें।

ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਖਾਲਸਾ ਜੀ ਸਾਹਿਬ, ਤਹਾਂ ਤਹਾਂ ਰਛਿਆ ਰਿਆਇਤ, ਦੇਗ ਤੇਗ ਫ਼ਤਹਿ,

ਬਿਰਦ ਕੀ ਪੈਜ, ਪੰਥ ਕੀ ਜੀਤ, ਸ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਹਾਇ, ਖਾਲਸੇ ਜੀ ਕੇ ਬੋਲ ਬਾਲੇ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!

जहाँ भी आदरणीय खालसा उपस्थित हों, अपनी सुरक्षा और कृपा प्रदान करें; नि:शुल्क रसोई और तलवार कभी विफल न हो; अपने भक्तों का मान बनाए रखना; सिक्ख लोगों को विजय दिलाओ; सम्मानित तलवार हमेशा हमारी सहायता के लिए आए; खालसा का सदा सम्मान हो ; बोले वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖੀ ਦਾਨ, ਕੇਸ ਦਾਨ, ਰਹਿਤ ਦਾਨ, ਬਿਬੇਕ ਦਾਨ, ਵਿਸਾਹ ਦਾਨ, ਭਰੋਸਾ ਦਾਨ, ਦਾਨਾਂ ਸਿਰ ਦਾਨ, ਨਾਮ ਦਾਨ, ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਜੀ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਚੌਕੀਆਂ, ਝੰਡੇ, ਬੁੰਗੇ, ਜੁਗੋ ਜੁਗ ਅਟੱਲ, ਧਰਮ ਕਾ ਜੈਕਾਰ, ਬੋਲੋ ਜੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ!!!

सिक्खों को सिक्ख धर्म का दान, लंबे केशों का दान, सिक्ख धर्म का दान, दिव्य ज्ञान का दान, दृढ़ विश्वास का दान, विश्वास का दान और नाम का सबसे बड़ा उपहार प्रदान करें। हे प्रभु ! राग-रागी, हवेली और झंडे हमेशा के लिए स्थित रहें; सत्य की हमेशा विजय हो; बोलो वाहे गुरु!

ਸਿੱਖਾਂ ਦਾ ਮਨ ਨੀਵਾਂ, ਮਤ ਉੱਚੀ ਮਤ ਦਾ ਰਾਖਾ ਆਪ ਵਾਹਿਗੁਰੂ।

सभी सिक्खों का मन विनम्र रहे और उनका ज्ञान ऊंचा रहे; हे प्रभु ! आप ज्ञान के रक्षक हैं।

ਹੇ ਨਿਮਾਣਿਆਂ ਦੇ ਮਾਣ, ਨਿਤਾਣਿਆਂ ਦੇ ਤਾਣ, ਨਿਓਟਿਆਂ ਦੀ ਓਟ, ਸੱਚੇ ਪਿਤਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ! ਆਪ ਦੇ ਹਜ਼ੂਰ.....ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਹੈ ਜੀ।

हे सच्चे पातशाह, वाहे गुरु! आप नम्र लोगों के मान हैं, असहायों की शक्ति हैं, आश्रयहीनों के आश्रय हैं, हम विनम्रतापूर्वक आपकी उपस्थिति में प्रार्थना करते हैं... .. (यहाँ किए गए अवसर या प्रार्थना को प्रतिस्थापित करें)।

ਅੱਖਰ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਭੁੱਲ ਚੁੱਕ ਮਾਫ ਕਰਨੀ। ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਕਾਰਜ ਰਾਸ ਕਰਨੇ।

कृपया उपरोक्त प्रार्थना को पढ़ने में हमारे दोषों और कमियों को क्षमा करें। कृपया सभी के उद्देश्यों को पूरा करें।

ਸੇਈ ਪਿਆਰੇ ਮੇਲ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਿਲਿਆਂ ਤੇਰਾ ਨ ਚਿੱਤਆਵੇ। ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਚੜ੍ਹਦੀ ਕਲਾ, ਤੇਰੇ ਭਾਣੇ ਸਰਬੱਤ ਦਾ ਭਲਾ।

हमें उन सच्चे भक्तों से मिलाने की कृपा करें जिनसे हम आपके नाम का स्मरण और ध्यान कर सकें। हे परमेश्वर! सच्चे गुरु नानक के माध्यम से, आपका नाम ऊँचा हो सकता है, और आपकी इच्छा के अनुसार सभी समृद्ध हो सकते हैं।

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ, ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ

खालसा भगवान् का है; सभी विजय भगवान् की विजय है।

यात्रा के लिए दर्शन

सिक्ख धर्म के दर्शनशास्त्र की विशेषता आध्यात्मिक और भौतिक दुनिया के लिए तर्क, व्यापकता और "तामझाम रहित" दृष्टिकोण है। इसका धर्मशास्त्र सादगी द्वारा चिह्नित है। सिक्ख नैतिकता में व्यक्ति के स्वयं के प्रति कर्त्तव्य और समाज (संगत) के प्रति कर्त्तव्य के बीच कोई संघर्ष नहीं है।

सिक्ख धर्म लगभग 500 साल पहले गुरु नानक द्वारा स्थापित सबसे कम उम्र का विश्व धर्म है। यह ब्रह्मांड के एक सर्वोच्च अस्तित्व और निर्माता (वाहेगुरु) में विश्वास पर बल देता है। यह शाश्वत आनंद के लिए एक सरल सीधा मार्ग प्रदान करता है और प्रेम और विश्वव्यापी भाईचारे का संदेश फैलाता है। सिक्ख धर्म दृढ़ता से एक एकेश्वरवादी विश्वास है और भगवान् को एकमात्र ऐसे व्यक्ति के रूप में पहचानता है जो समय या स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है।

सिक्ख धर्म का मानना है कि ईश्वर केवल एक ही है, जो निर्माता, निर्वाहक, विनाशक है और मानव रूप नहीं लेता है। सिक्ख धर्म में अवतार के सिद्धांत का कोई स्थान नहीं है। यह देवी-देवताओं और अन्य देवी-देवताओं को कोई मूल्य नहीं देता है।

सिक्ख धर्म में नैतिकता और धर्म एक साथ चलते हैं। आध्यात्मिक विकास की दिशा में क़दम बढ़ाने के लिए व्यक्ति को दैनिक जीवन में नैतिक गुणों को अपने मन में धारण करना चाहिए और सद्गुणों का अभ्यास करना चाहिए। ईमानदारी, करुणा, उदारता, धैर्य और विनम्रता जैसे गुणों को केवल प्रयासों और मन की दृढ़ता से ही विकसित किया जा सकता है। हमारे महान गुरुओं का जीवन इस दिशा में प्रेरणा का स्रोत है।

सिक्ख धर्म सिखाता है कि मानव जीवन का लक्ष्य जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ना और ईश्वर में विलीन होना है। यह गुरु की शिक्षाओं का पालन, पवित्र नाम (नाम) पर ध्यान और सेवा और दान के कार्यों के संपादन से पूरा किया जा सकता है।

नाम मार्ग भगवान् के स्मरण के लिए दैनिक भक्ति पर बल देता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए पांच भावनाओं, अर्थात, काम (इच्छा), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (सांसारिक लगाव) और अहंकार (अभिमान) को नियंत्रित करना होगा। संघ अनुष्ठान और नियमित प्रथाओं जैसे उपवास और तीर्थयात्रा, शकुन और तपस्या को सिक्ख धर्म में अस्वीकार कर दिया गया है। मानव जीवन का लक्ष्य भगवान् के साथ विलीन होना है और यह गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं का पालन करके पूरा किया जाता है। सिक्ख धर्म भक्ति मार्ग या निष्ठा मार्ग पर बल देता है। यद्यपि, यह ज्ञान मार्ग (ज्ञान का मार्ग) और कर्म मार्ग (कार्य का मार्ग) के महत्व को पहचानता है। यह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए ईश्वर की कृपा अर्जित करने की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल देता है।

सिक्ख धर्म एक आधुनिक, तार्किक और व्यावहारिक धर्म है। यह मानता है कि सामान्य पारिवारिक जीवन (गृहस्थ) मोक्ष के लिए कोई बाधा नहीं है। मोक्ष प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य या संसार का त्याग आवश्यक नहीं है। सांसारिक व्याधियों और प्रलोभनों के बीच अलग रहना संभव है। एक भक्त को संसार में रहना चाहिए और फिर भी अपने सिर को सामान्य तनाव और प्रलोभनों से स्वयं को दूर रखना चाहिए। वह एक विद्वान सैनिक और भगवान् के लिए संत होना चाहिए।

सिक्ख धर्म समस्त संसार का एक "धर्मनिरपेक्ष धर्म" है और इस प्रकार जाति, संप्रदाय, वंश या लिंग के आधार पर सभी भेदों को अमान्य करता है। यह मानता है कि सभी मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में समान हैं। गुरुओं ने महिलाओं की समानता पर बल दिया और कन्या भ्रूण हत्या और सती प्रथा को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का भी सक्रिय रूप से प्रचार किया और पर्दा प्रथा (महिलाओं का पर्दा पहनने) को अस्वीकार कर दिया। मन को ईश्वर पर केंद्रित करने के लिए व्यक्ति को पवित्र नाम (नाम) का ध्यान करना चाहिए और सेवा और दान के कार्यों को करना चाहिए। ईमानदारी से काम करके (किरत करना) अपनी आजीविका अर्जित करना सम्माननीय माना जाता है, न कि भीख मांग कर या बेईमानी से । वंद छकना, दूसरों के साथ साझा करना भी एक सामाजिक जिम्मेदारी है। व्यक्ति से जरूरतमंद लोगों की मदद, दसवंध (अपनी कमाई का 10%) के माध्यम से करने की उम्मीद की जाती है। सेवा, सामुदायिक सेवा भी सिक्ख धर्म का अभिन्न अंग है। सभी धर्मों के लोगों के लिए खुली हर गुरुद्वारे में मिलने वाली निःशुल्क सामुदायिक रसोई (लंगर) इस सामुदायिक सेवा की एक अभिव्यक्ति है।

सिक्ख धर्म आशावाद और आशा की वकालत करता है। यह निराशावाद की विचारधारा को स्वीकार नहीं करता है।

गुरुओं का मानना था कि इस जीवन का उद्देश्य और एक लक्ष्य है। यह आत्मज्ञान और ईश्वर की प्राप्ति का अवसर प्रदान करता है। इसके अलावा मनुष्य अपने कार्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। वह अपने कार्यों के परिणामों से प्रतिरक्षा का दावा नहीं कर सकता। इसलिए वह जो करता है उसमें बहुत सतर्क रहना चाहिए।

सिक्ख ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब, शाश्वत गुरु हैं। यह एकमात्र धर्म है जिसने पवित्र पुस्तक को एक धार्मिक गुरु का पद दिया है। सिक्ख धर्म में जीवित मानव गुरु (देहधारी) के लिए कोई स्थान नहीं है।

पगड़ी का महत्व

पगड़ी हमेशा एक सिक्ख का एक अभिन्न अंग रही है। लगभग 1500 A.D और सिक्ख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक के समय से, सिक्ख पगड़ी पहनते आ रहे हैं।

पगड़ी या "पगरी" को प्रायः "पग" या "दस्तार" के रूप में छोटा किया जाता है, एक ही वस्त्र के लिए विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग शब्द हैं। ये सभी शब्द पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपने सिर को ढंकने के लिए पहने जाने वाले परिधान को संदर्भित करते हैं। यह एक लंबे दुपट्टे की तरह कपड़े का एक टुकड़ा होता है जो सिर के चारों ओर लपेटा जाता है या कभी-कभी एक आंतरिक "टोपी" या पटका होता है। परंपरागत रूप से भारत में, पगड़ी केवल समाज में उच्च स्थिति के पुरुषों द्वारा पहनी जाती थी; निम्न स्थिति या निम्न जातियों के पुरुषों को पगड़ी पहनने की अनुमति नहीं थी।

हालांकि गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा बिना कटे बालों को रखना अनिवार्य था, जो कि पांच के या विश्वास के पांच लेखों में से एक था, यह लंबे समय से 1469 में सिक्ख धर्म की शुरुआत से ही सिक्ख धर्म से जुड़ा हुआ है। सिक्ख धर्म दुनिया में एकमात्र धर्म है। जिसमें सभी वयस्क पुरुषों के लिए पगड़ी पहनना अनिवार्य है। पश्चिमी देशों में पगड़ी पहनने वाले अधिकांश लोग सिक्ख हैं। सिक्ख पगड़ी को दस्तार भी कहा जाता है। 'दस्तार' फारसी शब्द है। इसका अर्थ है 'हैंड ऑफ गॉड' जिसका अर्थ है उनका आशीर्वाद।

सिक्ख अपनी कई और विशिष्ट पगड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं। परंपरागत रूप से, पगड़ी सम्मान का प्रतिनिधित्व करती है, और लंबे समय से केवल बड़प्पन के लिए आरक्षित एक वस्तु रही है। भारत के मुगल शासन के काल में, केवल मुसलमानों को पगड़ी पहनने की अनुमति थी। सभी गैर-मुस्लिमों को एक पगड़ी पहनने से दृढ़ता से रोक दिया गया था।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने मुगलों द्वारा इस चुनौति की अवहेलना करते हुए अपने सभी सिक्खों को पगड़ी पहनने के लिए कहा। यह उच्च नैतिक मानकों की मान्यता में पहना जाना था, जिसे उन्होंने अपने खालसा अनुयायियों के लिए तैयार किया था। वह चाहते थे कि उनका खालसा विशिष्ट हो और "शेष संसार से अलग दिखने" के लिए दृढ़ संकल्पित हो। वह चाहते थे कि वे सिक्ख गुरुओं द्वारा निर्धारित अद्वितीय मार्ग का अनुसरण करें। इस प्रकार, एक पगड़ीधारी सिक्ख हमेशा भीड़ से अलग खड़ा होता है, जैसा कि गुरु का इरादा था; क्योंकि वह चाहते थे कि उनके 'संत-सैनिक' न केवल आसानी से पहचाने जा सकें, बल्कि आसानी से मिल भी जाएँ।

जब एक सिक्ख पुरुष या महिला पगड़ी पहनती है, तो पगड़ी केवल कपड़े का एक फीता नहीं रह जाती है; क्योंकि यह सिक्ख के सिर के साथ एक ही हो जाती है। पगड़ी साथ ही सिक्खों द्वारा पहनी जाने वाली आस्था की चार अन्य वस्तुओं का अत्यधिक आध्यात्मिक और लौकिक महत्व है। जबकि पगड़ी पहनने से जुड़े कई प्रतीक हैं - स्वतंत्रता, समर्पण, स्वाभिमान,

साहस और धर्मपरायणता, लेकिन!, सिक्खों द्वारा पगड़ी पहनने का मुख्य कारण उनके संस्थापक के लिए उनका प्यार, आज्ञाकारिता और सम्मान दिखाना है। खालसा गुरु गोबिंद सिंह।

उपरोक्त मुख्य अंश में कथित शब्दों को किसी और से बदलने की आवश्यकता है। 'इसका कारण' हो सकता है

"पगड़ी हमारे लिए हमारे गुरु का उपहार है। इस तरह हम स्वयं को सिंह और कौर के रूप में ताज पहनाते हैं जो हमारी अपनी उच्च चेतना के प्रति प्रतिबद्धता को सिंहासन पर बिठाती है। पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से, यह अनुमानित पहचान स्वत्व, सभ्यता और विशिष्टता व्यक्त करती है। । यह दूसरों के लिए एक संकेत है कि हम अनंत की छवि में रहते हैं और सभी की सेवा करने के लिए समर्पित हैं। पगड़ी पूरी प्रतिबद्धता के अलावा किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। जब आप अपनी पगड़ी बांधकर सबसे अलग दिखना चुनते हैं, तो आप निडर होकर एक अकेले के रूप में खड़े होते हैं। छह अरब लोगों से अलग खड़ा व्यक्ति। यह सबसे उत्कृष्ट कार्य है।" (सिक्खनेट से उद्धृत)

महिलाओं की भूमिका

सिक्ख धर्म के सिद्धांतों में कहा गया है कि महिलाओं के पास पुरुषों के समान ही आत्माएं हैं और उनकी आध्यात्मिकता को विकसित करने का समान अधिकार है। वे धार्मिक सभाओं का नेतृत्व कर सकती हैं, अखंड पथ (पवित्र शास्त्रों का निरंतर पाठ) में भाग ले सकती हैं, कीर्तन (भजनों का सामूहिक गायन) कर सकती हैं, ग्रन्थियों (पुजारियों) के रूप में काम कर सकती हैं। वे सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं। सिक्ख धर्म पुरुषों और महिलाओं को समानता देने वाला पहला प्रमुख विश्व धर्म था। गुरु नानक ने लिंग आधारित समानता का उपदेश दिया, और उनके बाद आने वाले गुरुओं ने महिलाओं को सिक्ख पूजा और अभ्यास की सभी गतिविधियों में पूर्ण भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"महिला और पुरुष, सभी भगवान् द्वारा बनाए गए हैं। यह सब भगवान् का खेल है। नानक कहते हैं, तेरी सारी रचना अच्छी और पवित्र है" -गुरु ग्रंथ पृष्ठ 304

सिक्ख इतिहास ने पुरुषों की सेवा, भक्ति, बलिदान और बहादुरी में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से चित्रित किया है। सिक्ख परंपरा में महिलाओं की नैतिक गरिमा, सेवा और आत्म-बलिदान के कई उदाहरण लिखे गए हैं।

सिक्ख धर्म के अनुसार पुरुष और महिला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अंतर्संबंधों और अन्योन्याश्रय की व्यवस्था में जहाँ पुरुष स्त्री से जन्म लेता है, और स्त्री पुरुष के बीज से पैदा होती है। सिक्ख धर्म के अनुसार एक पुरुष एक महिला के बिना अपने जीवन में सुरक्षित और पूर्ण महसूस नहीं कर सकता है, और एक पुरुष की सफलता उस महिला के प्यार और समर्थन से संबंधित है जो उसके साथ अपना जीवन साझा करती है, और इसके विपरीत। गुरु नानक ने कहा: "[यह] एक महिला है जो दौड़ को जारी रखती है" और हमें "महिला को शापित और निंदित नहीं समझना चाहिए, [जब] महिला से नेता और राजा पैदा होते हैं।" SGGS पृष्ठ 473.

उद्धार: उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि क्या कोई धर्म महिलाओं को मोक्ष प्राप्त करने, भगवान् की प्राप्ति या उच्चतम आध्यात्मिक क्षेत्र प्राप्त करने में सक्षम मानता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

" सभी प्राणियों में ईश्वर व्यापक हैं, ईश्वर सभी रूपों में पुरुष और महिलामें व्यापत हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 605)।

गुरु ग्रंथ साहिब के उपरोक्त कथन के अनुसार, ईश्वर का प्रकाश दोनों लिंगों के साथ समान रूप से रहता है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों गुरु की शिक्षाओं का पालन करके समान रूप

से मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। कई धर्मों में स्त्री को पुरुष की आध्यात्मिकता में बाधक माना जाता है, किन्तु सिक्ख धर्म में नहीं। गुरु ने इसे अस्वीकार कर दिया। 'सिक्ख धर्म पर वर्तमान विचार' में, ऐलिस बसरके कहते हैं,

"पहले गुरु ने महिला को पुरुष के बराबर रखा ... महिला पुरुष के लिए बाधा नहीं थी, लेकिन भगवान् की सेवा करने और मोक्ष की तलाश में एक भागीदार थी"।

विवाह: गुरु नानक देव ने गृहस्थ की संस्तुत की - एक गृहस्थ का जीवन, ब्रह्मचर्य और त्याग के स्थान पर, पति और पत्नी समान भागीदार थे और दोनों को स्वामीभक्ति की आज्ञा दी गई थी। पवित्र छंदों में, घरेलू सुख को एक पोषित आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है और विवाह ने ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए एक निरंतर रूपक प्रदान किया है। भाई गुरदास, प्रारंभिक सिक्ख धर्म के कवि और सिख सिद्धांत के एक आधिकारिक व्याख्याकार, महिलाओं को उच्च सम्मान देते हैं। वे कहते हैं:

"एक महिला, अपने माता-पिता के घर में प्रिय होती है, जिसे उसके पिता और माता बहुत प्यार करते हैं। अपने ससुराल में, वह परिवार का स्तंभ होती है, उनके अच्छे भाग्य की दायित्व होती है... आध्यात्मिक ज्ञान एवं मोक्ष में भागीदार और महान गुणों से संपन्न, एक महिला, पुरुष का आधा हिस्सा, उसे मुक्ति के द्वार तक ले जाती है। (वारन, वि. 16)

समान स्थिति: पुरुषों और महिलाओं के बीच समान स्थिति सुनिश्चित करने के लिए, गुरुओं ने दीक्षा, निर्देश या संगत (पवित्र फेलोशिप) और पंगत (एक साथ भोजन करना) गतिविधियों में लिंग के बीच कोई अंतर नहीं किया। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश के अनुसार, गुरु अमर दास ने महिलाओं द्वारा घूंघट के प्रयोग का विरोध किया। उन्होंने शिष्यों में महिलाओं को कुछ समुदायों की निगरानी के लिए नियुक्त किया और सती प्रथा के विरुद्ध प्रचार किया। सिक्ख इतिहास में कई महिलाओं के नाम दर्ज हैं, जैसे माता गुजरी माई भागो, माता सुंदरी, रानी साहिब कौर, रानी सदा कौर और महारानी जींद कौर, जिन्होंने अपने समय की घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षा: सिक्ख धर्म में शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह किसी की भी सफलता की कुंजी है। यह व्यक्तिगत विकास की एक प्रक्रिया है और यही कारण है कि तीसरे गुरु ने कई विद्यालयों की स्थापना की। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"सभी दिव्य ज्ञान और चिंतन गुरु के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं" (गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 831)।

सभी के लिए शिक्षा आवश्यक है और सभी को सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए काम करना चाहिए। तीसरे गुरु द्वारा भेजे गए सिक्ख मिशनरियों में से बावन महिलाएँ थीं। 'सिक्ख महिलाओं की भूमिका और स्थिति में, डॉ मोहिंदर कौर गिल लिखती हैं, **"गुरु अमर दास को विश्वास था**

कि कोई भी शिक्षा तब तक जड़ नहीं ले सकती जब तक कि उन्हें महिलाओं द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।"

कपड़ों पर प्रतिबंध: महिलाओं को घूंघट न पहनने की आवश्यकता के अतिरिक्त, सिक्ख धर्म परिधान संहिता के संबंध में एक सरल लेकिन बहुत महत्वपूर्ण वर्णन करता है। यह लिंग की परवाह किए बिना सभी सिखों पर लागू होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है,

"उन कपड़ों को पहनने से बचें, जिनमें शरीर असहज हो और मन बुरे विचारों से भरा हो।" एसजीजीएस, पृष्ठ 16

इस प्रकार, सिक्खों को एहसास होगा कि किस प्रकार के कपड़े दिमाग को बुरे विचारों से भर देते हैं और उन्हें इससे बचना चाहिए। सिक्ख महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे कृपाण (तलवार) और अन्य के साथ अपनी रक्षा करें, यह महिलाओं के लिए अद्वितीय है क्योंकि यह इतिहास में पहली बार है जब महिलाओं से अपनी रक्षा करने की उम्मीद की गई थी और उनसे शारीरिक सुरक्षा के लिए पुरुषों पर निर्भर होने की उम्मीद नहीं की गई थी।

SGGS उद्धरण: गुरु नानक जी का कथन है कि, "पृथ्वी और आकाश में, मुझे कोई दूसरा दिखाई नहीं देता। सभी महिलाओं और पुरुषों के बीच, उसका प्रकाश चमक रहा है।" Sggs पृष्ठ 223। स्त्री से, पुरुष का जन्म होता है; स्त्री के भीतर पुरुष की कल्पना की जाती है; महिला से उसकी सगाई और शादी हो चुकी है। महिला उसकी दोस्त बन जाती है; नारी के माध्यम से भावी पीढ़ियां जन्म लेती हैं। जब उसकी स्त्री मर जाती है, तो वह दूसरी स्त्री की तलाश करता है; स्त्री के लिए वह बाध्य है। तो उसे बुरा क्यों कहते हो? उसी से राजा उत्पन्न होते हैं। स्त्री से स्त्री का जन्म होता है; स्त्री के बिना, कोई भी नहीं होगा। एसजीजीएस पृष्ठ 473

दहेज के संबंध में: "हे मेरे प्रभु, मुझे अपना नाम मेरी शादी के उपहार और दहेज के रूप में दें।" श्री गुरु राम दास जी, पृष्ठ 78, एसजीजीएस की पंक्ति 18

पर्दा प्रथा के विषय में: "रुको, ठहरो, ओ वधु - अपना चेहरा घूंघट से मत ढ़को। अंत में, यह तुम्हें आधा आवरण भी नहीं देगा।" तुमसे पूर्व जो चेहरे पर पर्दा किया करती थी, उनके पदचिन्हों पर मत चलना। अपने चेहरे पर पर्दा करने का एकमात्र गुण यह है कि कुछ दिनों के लिए लोग कहेंगे कि, "क्या गुणी दुल्हन आई है"। तुम्हारा यह घूंघट तभी सत्य हो जाएगा है, जब तुम भगवान् की महिमा को छोड़ते, नाचते और गाते हैं। -पृष्ठ 484, SGGSWomen

महिलाएँ और वास्तव में सभी आत्माओं को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए दृढ़ता से प्रोत्साहित किया गया था: "आओ, मेरी प्यारी बहनों और आध्यात्मिक साथियों; मुझे अपने आलिंगन में कसकर गले लगाओ। आओ एक साथ जुड़ें, और अपने सर्वशक्तिमान पति भगवान् की कहानियां सुनाएं।" - गुरु नानक, एसजीजीएस पृष्ठ 17, ।

"मित्र, अन्य सभी वस्त्र सुख को नष्ट कर देते हैं, अंगों पर जो पहना जाता है वह पीड़ा देते हैं और गलत सोच से मन को भर जाता है" - SGGS पृष्ठ 16

विनम्रता आपकी यात्रा का मुख्य सार है

विनम्रता सिक्ख धर्म का एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। इसके अनुसार सिक्खों को ईश्वर के सामने विनम्रतापूर्वक झुकना चाहिए। विनम्रता या नम्रता, पंजाबी में निकटवर्ती शब्द हैं। नम्रता एक गुण है जिसका गुरबाणी में उत्साहपूर्वक प्रचार किया जाता है। इस पंजाबी शब्द का अनुवाद "नम्रता", "उदारता" या "विनम्रता" है। ऐसा मनुष्य जिसका मन इस विचार से विचलित नहीं होता है कि वह किसी से बेहतर या अधिक महत्वपूर्ण है।

समस्या क्षेत्र - उपरोक्त वाक्य पूर्ण नहीं है

यह सभी मनुष्यों के पोषण के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है और एक सिक्ख की मानसिकता का एक अनिवार्य हिस्सा है और यह गुण हर समय सिक्ख के साथ होना चाहिए। सिक्ख शस्त्रागृह में अन्य चार गुण हैं : सत्य (सत), संतोष (संतोख), करुणा (दया) और प्रेम (प्यार) है।

एक सिक्ख के लिए ये पाँच गुण आवश्यक हैं और इन गुणों को आत्मसात करने और उन्हें अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के लिए गुरबाणी का ध्यान और पाठ करना उनका कर्त्तव्य है।

गुरबाणी हमें क्या बताती है:

"विनम्रता का फल सहज ज्ञान से प्राप्त शांति और आनंद है। विनम्रता के साथ वे उत्कृष्टता का खजाना ईश्वर का ध्यान करना जारी रखते हैं। ईश्वर से अभिज्ञ प्राणी विनम्रता में डूबा हुआ है। जिसका हृदय दयापूर्वक विनम्रता के साथ स्थिर है। सिक्ख धर्म विनम्रता को ईश्वर के समक्ष भिक्षा पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

गुरु नानक, सिक्ख धर्म के प्रथम गुरु :

"अपने मन में प्यार और विनम्रता के साथ सुनना और विश्वास करना, अपने भीतर गहरे पवित्र मंदिर में स्वयं को ईश्वर के नाम से शुद्ध करें।"- SGGS पृष्ठ 4

"संतोष को अपने कान की बाली बना लो, विनम्रता को अपने भिक्षापात्र बना लो, और ध्यान को अपने शरीर पर ज़लगाने वाली भस्म बना लो।"- एसजीजीएस पृष्ठ 6।

"विनम्रता के क्षेत्र में, शब्द सौंदर्य है। वहाँ अतुलनीय सुंदरता के रूप बनाए जाते हैं।" SGGS पृष्ठ 8

"विनम्रता, उदारता और अंर्तज्ञान मेरी सास और ससुर हैं" -SGGS पृष्ठ 152।

आध्यात्मिकता की ओर यात्रा

गुरु ग्रंथ साहिब एक शाश्वत जीवित गुरु है, जो सिक्ख गुरुओं, हिंदू और मुस्लिम संतों की एक काव्य रचना है। यह संकलन उनके माध्यम से समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर की ओर से एक उपहार है। गुरु ग्रंथ साहिब का दृष्टिकोण ईश्वरीय न्याय पर आधारित समाज का किसी भी प्रकार के उत्पीड़न के बिना है। जबकि ग्रंथ हिंदू धर्म और इस्लाम के धर्मग्रंथों को स्वीकार करता है और उनका सम्मान करता है, यह इनमें से किसी भी धर्म के साथ नैतिक सामंजस्य नहीं दर्शाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका के साथ बहुत सम्मान दिया जाता है। महिलाओं के पास पुरुषों के समान आत्माएं होती हैं और इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के समान अवसर के साथ आध्यात्मिकता के उच्च स्तर को प्राप्त करने का समान अधिकार होता है। महिलाएँ प्रमुख धार्मिक सभाओं सहित सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों में भाग ले सकती हैं।

सिक्ख धर्म समानता, सामाजिक न्याय, मानवता की सेवा और अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता की वकालत करता है। सिक्ख धर्म का आवश्यक संदेश दैनिक जीवन में करुणा, ईमानदारी, विनम्रता और उदारता के आदर्शों का अभ्यास करते हुए हर समय आध्यात्मिक भक्ति और ईश्वर के प्रति श्रद्धा रखना है। सिक्ख धर्म के तीन मूल सिद्धांत ध्यान और ईश्वर को याद करना, ईमानदारी से जीने के लिए काम करना और दूसरों के साथ साझा करना है।

आत्मा के लिए इस आध्यात्मिक यात्रा पर जाने का प्रयास करने के लिए बधाई। अनुवाद कभी भी मूल के करीब नहीं हो सकता, खासकर जब पूरा गुरु ग्रंथ साहिब कविता में हो और रूपकों का उपयोग कार्य को अत्यधिक कठिन बना देता है। दिव्य संदेश में, हिंदु, मुस्लिम पौराणिक कथाओं में प्राय: प्रह्लाद, हिरण्याक्ष, लक्ष्मी, ब्रह्मा आदि का प्रयोग किया जाता है। कृपया इन्हें अक्षरशः न पढ़ें बल्कि इनके अंतर्निहित संदेश को समझें। ध्यान इस तथ्य पर है कि ईश्वर एक है और उसके साथ मिलन ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

यह कार्य वर्षों से कई स्वयंसेवकों द्वारा किया गया है, ताकि आप तक आपकी भाषा में ईश्वरीय संदेश पहुँचाया जा सके। यदि आपका कोई प्रश्न हैं तो कृपया walnut@gmail.com पर बेझिझक ईमेल करें और हमें इस यात्रा में आपके साथ जुड़ना अच्छा लगेगा।